अध्याय 4

नहेम्याह द्वारा विरोधियों का सामना

अध्याय 4 में, नहेम्याह ने यहूदियों का अपने पड़ोसियों से किए गए विरोध का सामना करने का वर्णन किया क्योंकि उन्होंने यरूशलेम की शहरपनाह को फिर से बनाया था - विरोध जो सम्बल्लत और तोबियाह के साथ उत्पन्न हुआ था, परन्तु इसमें सामरी, अरबी, अम्मोनी और अशदोदी भी शामिल थे। सबसे पहले, यहूदा के शत्रु उनके प्रयासों को ठट्ठों में उड़ाने लगे (4:1-3)। फिर उन्होंने आक्रमण करने की धमकी दी (4:7, 8)। नहेम्याह उनके ठट्ठों में उड़ाए जाने या उनकी धमकियों से डरा नहीं था। इसके अलावा, शत्रु ने अचानक आक्रमण की योजना बनाई (4:11)। नहेम्याह ने प्रार्थना में परमेश्वर की ओर देखा और लोगों को इन शत्रुओं से बचाने के लिये उचित कदम उठाए।

कार्य को ठट्ठों में उड़ाना (4:1-6)[1]

शत्रुओं की युक्ति (4:1-3)

[1]जब सम्बल्लत ने सुना कि यहूदी लोग शहरपनाह को बना रहे हैं, तब उसने बुरा माना, और बहुत रिसियाकर यहूदियों को ठट्ठों में उड़ाने लगा। [2]वह अपने भाइयों के और शोमरोन की सेना के सामने यों कहने लगा, "वे निर्बल यहूदी क्या करना चाहते हैं? क्या वे वह काम अपने बल से करेंगे? क्या वे अपना स्थान दृढ़ करेंगे? क्या वे यज्ञ करेंगे? क्या वे आज ही सब काम पूरा कर डालेंगे? क्या वे मिट्टी के ढेरों में के जले हुए पत्थरों को फिर नये सिरे से बनाएँगे?" [3]उसके पास अम्मोनी तोबियाह था, और वह कहने लगा, "जो कुछ वे बना रहे हैं, यदि कोई गीदड़ भी उस पर चढ़े, तो वह उनकी बनाई हुई पत्थर की शहरपनाह को तोड़ देगा।"

आयतें 1, 2. स्पष्ट रूप से, **सम्बल्लत** यरूशलेम के आसपास के क्षेत्र में नहीं रहता था; वह **सामरिया** का अधिपति था (2:10 पर टिप्पणियाँ देखें)। दूसरे लोगों ने उसे नगर की **शहरपनाह** के पुनर्निर्माण के यहूदियों के प्रयासों के बारे में बताया।

परन्तु, 4:5 बताता है कि जब सम्बल्लत ने वह सब सुना, जो यहूदी कर रहे थे, तो वह स्वयं वहाँ देखने गया कि क्या हो रहा है।

सम्बल्लत के साथ अन्य सामरियों की: **अपने भाइयों**, या साथी सामरी, और **धनी लोग** या "सेना" (NIV) की एक टुकड़ी थी। यहाँ प्रयुक्त इब्रानी शब्द (חַיִל, *चायिल*) का अर्थ "सामर्थ्य," "धन," या "सेना" हो सकता है।[2]

जो कुछ उसने देखा उससे वह बहुत क्रोधित हुआ, सम्बल्लत ने जो लोग उसके साथ आए थे और जो शहरपनाह को बना रहे हैं की सुनकर तुरन्त उनसे बात की। आयत 5 कहती है कि "उन्होंने ... बनानेवालों के सामने क्रोध दिलाया है। "सम्बल्लत की नकारात्मक प्रतिक्रिया जो 2:10, 19 में दिखाई देती है, यहाँ अस्पष्ट है। जैसा कि अध्याय 2 की टिप्पणियों में सुझाया गया है, यरूशलेम की स्थिति में किसी भी सुधार ने सम्भवतः उसके स्वयं के अधिकार और सम्मान के लिये खतरा उत्पन्न कर दिया था।

सम्बल्लत ने ठट्ठों में उड़ाने के साथ समाचार पर भी प्रतिक्रिया व्यक्त की। वह यह कहकर **यहूदियों** और उनके प्रयासों **को ठट्ठों में उड़ाने लगा** कि वे स्वयं अपने बल से काम को पूरा करने के लिये बहुत **निर्बल** थे। उसके कहने का तात्पर्य यह था कि वे **यज्ञ कर** नहीं सकते क्योंकि वे कभी भी काम **पूरा** नहीं कर पाएँगे। डेरेक किडनर द्वारा भाषा की एक और व्याख्या दी गई है: *"क्या वे यज्ञ करेंगे?* शायद इस तरह: क्या ये कट्टरपंथी शहरपनाह की *प्रार्थना* करने जा रहे हैं?"[3] सम्बल्लत ने कहा," **क्या वे मिट्टी के ढेरों में के जले हुए पत्थरों को फिर नये सिरे से बनाएँगे?** उसके अनुमान में, दीवार ऐसी उजाड़ पड़ी है कि फिर से न बनाया जा सके। सम्बल्लत के विवरण में कोई संदेह वाली बात नहीं थी।

आयत 3. अम्मोनी तोबियाह ने (देखें 2:10 पर टिप्पणियाँ) उन ठट्ठों में जुड़ गया और उनके प्रयासों पर ताना मारते हुए कहने लगा, **"... यदि कोई गीदड़ भी उस पर चढ़े, तो वह उनकी बनाई हुई पत्थर की शहरपनाह को तोड़ देगा।"** (देखें विलाप. 5:18; यहेज. 13:4).

नहेम्याह की प्रतिक्रिया: प्रार्थना और कार्य (4:4-6)

[4]हे हमारे परमेश्वर, सुन ले कि हमारा अपमान हो रहा है; और उनका किया हुआ अपमान उन्हीं के सिर पर लौटा दे, और उन्हें बँधुआई के देश में लुटवा दे। [5]उनका अधर्म तू न ढाँप, और न उनका पाप तेरे सम्मुख से मिटाया जाए; क्योंकि उन्होंने तुझे शहरपनाह बनानेवालों के सामने क्रोध दिलाया है। [6]हम लोगों ने शहरपनाह को बनाया; और सारी शहरपनाह आधी ऊँचाई तक जुड़ गई। क्योंकि लोगों का मन उस काम में नित लगा रहा।

आयतें 4, 5. नहेम्याह ने यहोवा के सामने समस्या को रख कर सम्बल्लत के विरोध में प्रतिक्रिया व्यक्त की: **हे हमारे परमेश्वर, सुन ले कि हमारा अपमान हो रहा है!** वह चाहता था कि परमेश्वर उन शत्रुओं से पलटा ले, जैसा कि उसने कहा

था, **उनका किया हुआ अपमान उन्हीं के सिर पर लौटा दे, और उन्हें बँधुआई ... में लुटवा दे।** उसने परमेश्वर से यह भी कहा, **उनका अधर्म तू न ढाँप, और न उनका पाप तेरे सम्मुख से मिटाया जाए।** इब्रानी शब्द (כָּפַר, *कसाह*) का अनुवाद "क्षमा करना" है जिसका शाब्दिक अर्थ "ढाँपना" है।

नहेम्याह की प्रार्थना कुछ तथाकथित विलाप के भजन के समान है (देखें, उदाहरण के लिये, भजन 79:4-12; 123:3, 4; 137:7-9)। इसके अलावा, कुछ भविष्यद्वक्ताओं ने परमेश्वर से कहा कि इस्राएल के शत्रुओं या उनके विरुद्ध बुराई करने वालों को नष्ट कर दे (यिर्म. 11:18-20; 15:15; 17:18; 18:19-23)। ऐसी प्रार्थनाएँ उन लोगों को अजीब लगती हैं, जिन्हें "[अपने] शत्रुओं" से प्रेम करना सिखाया गया है (मत्ती 5:44); परन्तु, क्योंकि यहूदी परमेश्वर के लोग थे, उनके विरुद्ध लड़ाई करना परमेश्वर से लड़ाई करना था। परमेश्वर से अपने शत्रुओं को नष्ट करके उसके न्याय को प्रदर्शित करने का आग्रह करना अनुचित नहीं लगता।[4]

यहूदा के शत्रुओं को दंडित किया जाना चाहिए, क्योंकि **उन्होंने शहरपनाह बनानेवालों के सामने क्रोध दिलाया** था।[5] स्पष्ट है, शहरपनाह का काम करने वालों ने ठट्ठों में उड़ाए जाने को सुना और उन्होंने मान लिया कि उनके प्रयास व्यर्थ हैं। शायद कुछ लोग छोड़कर जाने के लिये तैयार थे। यदि ऐसा है, तो नहेम्याह के शब्दों का प्रभाव समझने योग्य है।

आयत 6. नहेम्याह के रवैये, जैसा कि उसकी प्रार्थना में व्यक्त किया गया है, ने शहरपनाह को बनानेवालों को प्रभावित किया। परमेश्वर की सहायता से, उन्होंने **शहरपनाह को बनाया** जब तक वह **आधी ऊँचाई** तक बन नहीं गया। नहेम्याह ने इस उपलब्धि का श्रेय **लोगों** को दिया; उसने कहा कि उन्होंने ऐसा इसलिये किया क्योंकि उनका **मन** या "हृदय" (NIV) **उस काम में नित लगा रहा।** नहेम्याह एक महान अगुवा था, परन्तु अगुवे तब तक कुछ भी पूरा नहीं कर सकते जब तक वे लोग जिनकी वे अगुवाई करते हैं उस कार्य को करने के लिये तैयार न हों।

धमकी का प्रभाव (4:7-10)

[7]जब सम्बल्लत और तोबियाह और अरबियों, अम्मोनियों और अशदोदियों ने सुना कि यरूशलेम की शहरपनाह की मरम्मत होती जाती है, और उसमें के नाके बन्द होने लगे हैं, तब उन्होंने बहुत ही बुरा माना; [8]और सभों ने एक मन से गोष्ठी की कि जाकर यरूशलेम से लड़ें, और उसमें गड़बड़ी डालें। [9]परन्तु हम लोगों ने अपने परमेश्वर से प्रार्थना की, और उनके डर के मारे उनके विरुद्ध दिन रात के पहरुए ठहरा दिए। [10]परन्तु यहूदी कहने लगे, "ढोनेवालों का बल घट गया, और मिट्टी बहुत पड़ी है, इसलिये शहरपनाह हम से नहीं बन सकती।"

आयतें 7, 8. यरूशलेम की शहरपनाह पर यहूदियों के निरन्तर काम ने उनके शत्रुओं को संकेत दिया कि अन्य युक्तियों की आवश्यकता पड़ेगी। इस बार विरोध

केवल **सम्बल्लत** और **तोबियाह** तक ही सीमित नहीं था, बल्कि **अरबियों, अम्मोनियों और अशदोदियों** तक बढ़ चुका था। अरबी विरोधियों का नेतृत्व सम्भवतः गेशेम द्वारा किया गया था, जिसे 2:19 में संदर्भित किया गया था (देखें 2:10 पर टिप्पणियाँ)। वे यहूदियों की भूमि के दक्षिण देशों में बसे हुए थे। अम्मोन यरूशलेम के पूर्व में था, और सामरिया यहूदा के उत्तर में था। अशदोद पलिश्तियों के प्रमुख नगरों में से एक था, और इसका नाम अब यहूदा की पश्चिमी सीमा पर पूरे प्रान्त के लिये संदर्भित किया गया था। दूसरे शब्दों में, यहूदा के छोटे राज्य के आसपास **सभों ने एक मन से गोष्ठी की कि जाकर यरूशलेम से लड़ें, और उसमें गड़बड़ी डालें**। स्पष्ट है, गोष्ठी करनेवालों ने अभी तक युक्ति नहीं बनाई थी कि वे कब और कहाँ आक्रमण करेंगे।

कुछ टिप्पणीकार इस खतरे को हल्का करते हैं, इसे सबसे बड़ी "गड़बड़ी" कहा जाता है।[6] वे मानते हैं कि यहूदियों के शत्रुओं ने उस कार्य पर आक्रमण करने की हिम्मत नहीं की होगी जिसे फारस के राजा द्वारा अधिकृत किया गया था। कई विचार इस दृष्टिकोण के विपक्ष में तर्क देते हैं। पहला, सुसा बहुत दूर था। नहेम्याह और उसके काम का बचाव करने के लिये फारसी सेना मौजूद नहीं थी। यदि सम्बल्लत के पास एक बड़ी सेना होती, तो वह उसे बचाने के लिये किसी भी फारसी सेना के पहुँचने से बहुत पहले ही नहेम्याह और उसके कार्यकर्ताओं को नष्ट कर सकता था। दूसरा, फारसी राजा अपने मन को बदलने के लिये जाने जाते थे; अन्य प्रान्तों के अधिपति तर्क दे सकते थे कि यदि उन्होंने आक्रमण किया, तो वे बाद में राजा को अपने कार्यों का औचित्य प्रमाणित कर सकते हैं (शायद उनके कारणों के बारे में झूठ बोलकर)।[7] तीसरा, फारसी आधिपत्य के कार्यकाल के दौरान अधिपतियों के बीच संघर्ष होने की जानकारी है। तो सम्बल्लत और दूसरों से आक्रमण के खतरे को एक बहुत ही वास्तविक खतरे के रूप में देखा जाना चाहिए। परन्तु, नहेम्याह के नेतृत्व और यहूदियों के परिश्रम ने सम्बल्लत और उसके सहयोगियों को वह करने से रोक दिया, जिसकी धमकी उन्होंने दी थी।

आयत 9. हिंसा के खतरे के लिये नहेम्याह की प्रतिक्रिया दोगुनी थी। यहूदियों ने **... परमेश्वर से प्रार्थना की** और उन्होंने [उनके शत्रुओं] **विरुद्ध दिन रात के पहरुए ठहरा दिए**। जबकि वे सुरक्षा के लिये परमेश्वर पर निर्भर थे, परमेश्वर के लोगों ने भी वही किया जो वे अपनी सुरक्षा के लिये कर सकते थे।

आयत 10. उस समय, यहूदियों ने स्पष्ट रूप से कहा था: उन्होंने जोर देते हुए कहा था **कि ढोनेवालों का बल** घटने लगा था, **मिट्टी बहुत पड़ी है**[8] जिसे अभी भी हटाया जाना बाकी था, और उन्होंने इस कार्य को पूरा करने में असमर्थता जताई। आयत को कविता के रूप में मुद्रित किया गया है और एक कहावत या गीत के रूप में व्याख्या की गई है जिसे व्यापक रूप से जाना जाता था। नहेम्याह के वृत्तान्त में इसके शामिल होने का कारण स्पष्ट नहीं है। शायद नहेम्याह ने उस समय निराश हुए कर्मचारियों को संदर्भित करने के लिये इसका उल्लेख किया था। वे पत्थरों और मलबे को ढोने के कारण थके हुए थे, और बचे हुए काम को करना असम्भव जान पड़ रहा था।[9] एक और सम्भावना यह है कि इस गीत का उद्देश्य शत्रु के प्रयासों

को ठट्ठों में उड़ाने का हो सकता था। अपने विरोधियों की धमकियों के बावजूद, शहरपनाह को बनानेवाले अपने काम के साथ प्रगति कर रहे थे, तब भी वे जब गा रहे थे, **"इसलिये शहरपनाह हम से नहीं बन सकती।"** वे "शहरपनाह को फिर से बनाने" में असमर्थ रहे थे; परन्तु परमेश्वर समर्थ था, इसलिये शहरपनाह को फिर से बनाया गया।[10]

अचानक आक्रमण की युक्ति बनाना और गड़बड़ी डालना (4:11-15)

[11]हमारे शत्रु कहने लगे, "जब तक हम उनके बीच में न पहुँचें, और उन्हें घात करके वह काम बन्द न करें, तब तक उनको न कुछ मालूम होगा, और न कुछ दिखाई पड़ेगा।" [12]फिर जो यहूदी उनके आस पास रहते थे, उन्होंने सब स्थानों से दस बार आ आकर, हम लोगों से कहा, "तुम को हमारे पास लौट आना चाहिये।" [13]इस कारण मैं ने लोगों को तलवारें, बर्छियाँ और धनुष देकर शहरपनाह के पीछे सबसे नीचे के खुले स्थानों में घराने घराने के अनुसार बैठा दिया। [14]तब मैं देखकर उठा, और रईसों और हाकिमों और अन्य सब लोगों से कहा, "उनसे मत डरो; प्रभु जो महान् और भययोग्य है, उसी को स्मरण करके, अपने भाइयों, बेटों, बेटियों, स्त्रियों और घरों के लिये युद्ध करना।" [15]जब हमारे शत्रुओं ने सुना कि यह बात हम को मालूम हो गई है, और परमेश्वर ने उनकी युक्ति निष्फल की है, तब हम सब के सब शहरपनाह के पास अपने अपने काम पर लौट गए।

आयत 11. यहूदियों के **शत्रुओं** द्वारा अचानक आक्रमण की युक्ति बनाई गई थी। उन्होंने **उन्हें घात** करने और **काम बन्द न करें** की युक्ति बनाई। यहूदियों और उनके विरोधियों के बीच संघर्ष में, कोई भी पक्ष अपनी योजनाओं को गुप्त नहीं रख सका। नहेम्याह स्पष्ट रूप से छावनी में भेदियों के बारे में चिन्तित था जब वह रात में चुपके से शहरपनाह का निरीक्षण करता था। फिर भी, सम्बल्लत ने उसके आने का पता किया और काम शुरू होने के कुछ ही समय पहले उसके बारे में जाना (2:10, 19)। दूसरी ओर, यद्यपि गोष्ठी करनेवालों ने अचानक आक्रमण करने की युक्ति बनाई थी, सामरिया के लोग यहूदियों से सहानुभूति रखते थे (निश्चित ही उनमें से कई; देखें 4:12)। उन्होंने नहेम्याह को उनके शत्रुओं के षड्यंत्र का पता चलने दिया। शायद यहूदियों और अन्य लोगों के साथ यहूदा और सामरिया में जनसंख्या मिश्रित थी।

आयत 12. जो यहूदी सामरी लोगों के **आस पास रहते थे** उनकी युक्तियों का **दस बार**, अर्थात् बार-बार विवरण दिया; परन्तु ये यहूदी जो सामरिया के आस-पास रहते थे, वे परमेश्वर और उनके लोगों के प्रति विश्वासयोग्य रहे। यहूदियों को चेतावनी दी गई कि उनके शत्रु **सब स्थानों से** उन पर आक्रमण करेंगे, और इसका तात्पर्य यह है कि वे भारी बल का उपयोग करेंगे। **उनको हमारे पास लौट आना**

चाहिये यरूशलेम के शत्रुओं के आक्रमण और शहरपनाह पर यहूदियों के काम का उल्लेख करते प्रतीत होता है।

क्योंकि इब्रानी लेख कठिन है, इसलिये अन्य अनुवाद सम्भव हैं। एक एड. में एक विकल्प पाया जाता है, जिसमें "आपको हमारे पास लौटना चाहिए" (ESV) लिखा है। यदि यह सही है, तो शब्दों को निम्नलिखित तरीकों से समझा जा सकता है: (1) कस्बों और गाँवों में रहने वाले यहूदी, नहेम्याह और यरूशलेम में रहने वाले यहूदियों से सुरक्षा की विनती कर रहे थे। उन्हें अपने शत्रुओं के विरोध में अतिरिक्त बचाव की आवश्यकता थी। (2) यरूशलेम के बाहर के यहूदी सामान्य रूप से नगर के लोगों से उसे छोड़ने और उनसे बाहर आने का आग्रह कर रहे थे। ऐसा करने से उनके प्राण बच जाते। (3) यरूशलेम के बाहर के यहूदी विशेष रूप से अपने स्वयंसेवी कर्मचारियों, अपने रिश्तेदारों और मित्रों के लिए चाहते थे कि वे उनके पास लौट आएँ ताकि यरूशलेम पर आक्रमण होने पर उनके प्राण बच जाएं।[11]

आयतें 13, 14. नहेम्याह ने कहा, सबसे पहले, **शहरपनाह** के उन हिस्सों पर **लोगों** को तैनात करने से जिनमें आक्रमण होने की सम्भावना सबसे अधिक थी। इस कार्य को सेना को दूर से देखने में भी समझा गया है जो शहरपनाह के बाहर से देखा जा सकता था, क्योंकि लड़नेवालों को **खुले स्थानों** में रखा गया था जहाँ उन्हें शत्रु के भेदियों द्वारा आसानी से देखा जा सकता था।[12]

साथ ही, नहेम्याह ने **घराने घराने** को **तलवारें, बर्छियाँ और धनुष** रखने के लिये प्रेरितों. किया, जहाँ वे काम कर रहे थे। "घराने" के लिये इब्रानी शब्द (מִשְׁפָּחָה, *मिश्पाचाह*) अधिक व्यापक रूप से एक "गोत्र" को संदर्भित करता है। यहूदियों के हथियारों के वर्गीकरण ने प्रदर्शित किया कि वे लंबी दूरी के प्रहारों और हाथों से लड़ने के लिये तैयार थे।

अन्त में, नहेम्याह ने **रईसों और हाकिमों और अन्य सब लोगों से** उत्साहजनक शब्द **कहा**। उसके भाषण ने स्मरण पर जोर दिया। उसने लोगों से आग्रह किया, **"उनसे मत डरो; प्रभु को स्मरण करो।"** उन्हें उसी पर भरोसा करना चाहिए, क्योंकि वह **महान् और भययोग्य है**। इसके अलावा, नहेम्याह ने लोगों से उनके रिश्तों को स्मरण रखने की चुनौती दी। उसने उनसे न केवल अपने लिये, बल्कि उन लोगों और सम्पत्ति के लिये भी लड़ने का आह्वान किया जो उनके लिये सबसे अधिक महत्वपूर्ण थे: उनके **भाइयों**, उनके **बेटों, बेटियों**, उनकी **स्त्रियों** और उनके **घरों** के लिये।

आयत 15. अचानक रीति से काम करने से बचाव के लिये नहेम्याह ने तैयारी की। **उनके शत्रुओं ने सुना** कि उनकी योजना यहूदियों पर प्रकट हो गई थी, और उन्होंने महसूस किया कि **उनकी युक्ति निष्फल हो गई** थी। नहेम्याह ने उनकी युक्ति के निष्फल हो जाने का श्रेय परमेश्वर को दिया, क्योंकि उसने **परमेश्वर** की सहायता को एकमात्र कारण जाना था जिससे यहूदी अपने शत्रुओं के घातक आक्रमण से बचने में सक्षम हो पाए थे।

इसके बाद, यहूदी अपने-अपने **काम पर लौट गए**। निश्चित ही, उन्होंने

पूर्वानुमानित आक्रमण से सम्बन्धित आपातकालीन स्थितियों के चलते पुनर्निर्माण के प्रयासों को निलम्बित कर दिया था। फिर भी, खतरा पूरी तरह से टला नहीं था। नहेम्याह जानता था कि यहूदा के शत्रु आक्रमण करने में सक्षम थे।

शहरपनाह की सुरक्षा के लिये नहेम्याह की युक्ति (4:16-23)

16उस दिन से मेरे आधे सेवक तो उस काम में लगे रहे और आधे बर्छियों, तलवारों, धनुषों और झिलमों को धारण किए रहते थे; और यहूदा के सारे घराने के पीछे हाकिम रहा करते थे। 17शहरपनाह के बनानेवाले और बोझ के ढोनेवाले दोनों भार उठाते थे, अर्थात् एक हाथ से काम करते थे और दूसरे हाथ से हथियार पकड़े रहते थे। 18राजमिस्त्री अपनी अपनी जाँघ पर तलवार लटकाए हुए बनाते थे। नरसिंगे का फूँकनेवाला मेरे पास रहता था। 19इसलिये मैं ने रईसों, हाकिमों और सब लोगों से कहा, "काम तो बड़ा और फैला हुआ है, और हम लोग शहरपनाह पर अलग अलग एक दूसरे से दूर रहते हैं। 20इसलिये जिधर से नरसिंगा तुम्हें सुनाई दे, उधर ही हमारे पास इकट्ठे हो जाना। हमारा परमेश्वर हमारी ओर से लड़ेगा।" 21यों हम काम में लगे रहे, और उनमें आधे, पौ फटने से तारों के निकलने तक बर्छियाँ लिये रहते थे। 22फिर उसी समय मैं ने लोगों से यह भी कहा, "एक एक मनुष्य अपने दास समेत यरूशलेम के भीतर रात बिताया करे, कि वे रात को तो हमारी रखवाली करें, और दिन को काम में लगे रहें।" 23इस प्रकार न तो मैं अपने कपड़े उतारता था, और न मेरे भाई, न मेरे सेवक, न वे पहरुए जो मेरे अनुचर थे, अपने कपड़े उतारते थे; सब कोई पानी के पास भी हथियार लिये हुए जाते थे।

यहूदियों को आश्चर्यचकित करने के लिये सम्बल्लत के षड्यंत्र को निष्फल करने के बाद, नहेम्याह ने शहरपनाह के लिये चल रही सुरक्षा के लिये युक्ति बनाई। यरूशलेम और इसकी शहरपनाह के लिये उसकी रणनीति सावधानीपूर्वक संगठन और सैन्य तैयारी का एक अच्छा उदाहरण प्रदान करती है। राष्ट्र की सुरक्षा के लिये उसकी योजना में लोगों के विभिन्न समूहों के लिये विस्तृत निर्देश थे, और सभी को विशेष जिम्मेदारियाँ दी गई थीं।

आयत 16. नहेम्याह ने कहा कि (उसके) **आधे सेवक** काम करते थे **और आधे** अपने हथियारों के साथ खड़े रहते थे। अपने "सेवकों" की बात करते हुए, नहेम्याह शायद उसे सौंपे गए पुरुषों के एक विशेष दल की बात कर रहा था, शायद इसलिये कि वह अधिपति और यहूदा की सेनाओं का अगुवा था। यदि हाँ, तो वे जो तैनात किए गए थे जहाँ वे सबसे बड़ी सहायता कर सकते हैं।

नहेम्याह ने स्पष्ट रूप से यह देखा कि उसके लोग अच्छी तरह से सशस्त्र थे; उनके पास **बर्छियाँ, तलवारें, धनुष और झिलम** थे। **हाकिम,** या "अधिकारी" (NIV) कार्यकर्ता-योद्धाओं के व्यक्तिगत समूहों की देखरेख के लिये नियुक्त किए गए थे। वे उनके आदेश के तहत उन लोगों के पास खड़े थे, यदि कोई आक्रमण हुआ

तो वे कार्यभार संभालने के लिये तैयार थे।

आयतें 17, 18. शहरपनाह के बनानेवाले और बोझ ढोनेवाले दोनों भार उठाते थे, उन पर आक्रमण करने पर बनानेवाले से लेकर लड़नेवालों तक तुरन्त आदान प्रदान हो सकता था। वे एक हाथ से काम करते थे और दूसरे हाथ से हथियार पकड़े रहते थे। राजमिस्त्री अपनी अपनी जाँघ पर तलवार लटकाए हुए होते थे। नरसिंगा बजाने के लिये एक नरसिंगे का फूँकनेवाला हमेशा नहेम्याह के पास रहता था। LXX कहता है कि एक "नरसिंगे का फूँकनेवाला" उसके पास (अर्थात्, शहरपनाह का बनानेवाला) पाया गया था। इससे पता चलता है कि शहरपनाह के चारों ओर कई नरसिंगे के फूँकनेवाले तैनात थे, ताकि नरसिंगे की जोर की आवाज से यह संकेत मिले कि आक्रमण कहाँ हुआ है।[13] इस लेख को पढ़ने के साथ सामंजस्य बिठाते हुए, जोसेफस ने कहा कि नहेम्याह ने "हर पाँच सौ फीट पर नरसिंगे के फूँकनेवाले तैनात किए थे।"[14]

आयत 19. किसी भी आवाज/संकेत प्रणाली के सम्बन्ध में कोई अन्य विवरण नहीं दिया गया है, परन्तु इस तरह की प्रणाली की आवश्यकता थी क्योंकि कर्मचारी **शहरपनाह पर अलग अलग एक दूसरे से दूर रहते हैं**।

आयत 20. लोगों से कहा गया था कि सब **इकट्ठे हो जाना** अर्थात् इकट्ठा "करना" (NCV) या "वे स्वयं इकट्ठा हों" (NJPSV) - कहीं भी जहाँ आक्रमण होता है, जब भी **नरसिंगा** की आवाज आए। नहेम्याह ने एक सच्चाई का स्मरण दिलाते हुए लोगों को लगातार प्रेरितों. करके उनका मनोबल बढ़ाया: **"हमारा परमेश्वर हमारी ओर से लड़ेगा।"**

आयत 21. कर्मी और उनके रक्षक सचेत और मेहनती थे। उन्होंने न केवल सूर्योदय से सूर्यास्त तक, बल्कि **पौ फटने से तारों के निकलने तक काम** किया।

आयत 22. जो लोग यरूशलेम के बाहर रात बिताते थे, उन्हें निर्देश दिया गया था कि वे **यरूशलेम के भीतर रात बिताया करें** ताकि पहरुओं के रूप में **रखवाली करें** और **रात को** आक्रमण होने पर शहर की रक्षा करने में सहायता करें।

लेस्ली सी. एलन ने इस कार्य को यरूशलेम के बाहर यहूदियों के अनुरोध के रूप में देखा कि उनके स्वयंसेवक कर्मी उनके पास "वापस आ जाएँ" (देखें 4:12 पर टिप्पणियाँ)। उन्होंने लिखा, "अन्त में, [नहेम्याह] कड़ी चुनौती से बाहर निकल आया - एक दिन के काम के बाद घर पर बिना सूचना दिए - कपटी के उत्तर में, यदि अच्छी तरह से अर्थ, आयत 12 की विनती।" एलन ने कहा, "आपातकाल के दौरान के विचार में, [नहेम्याह] ने आदेश दिया कि अब से किसी को भी रात को यरूशलेम नहीं छोड़ना है और कर्मियों को रात भर, सम्भवतः पालियों में सेवा करनी थी।"[15]

आयत 23. वे नगर के बाहर भी सुरक्षित थे। इन कर्मियों को लगातार तैयार रहने के लिये प्रोत्साहित किया गया। नहेम्याह, उसके **भाई**, उसके **सेवक** और **पहरुए जो मेरे अनुचर थे** कभी **कपड़े** नहीं उतारते थे; और वे जहाँ भी जाते थे, अपने **हथियार**[रों] को अपने साथ लेकर जाते थे।

वाक्यांश **पानी के पास भी** कठिन लगता है। अन्य संस्करणों के अनुसार,

नहेम्याह और उसके लोगों ने अपने कपड़े नहीं बदले और पानी के पास भी अपने हथियार लिए हुए जाते थे। उन पुरुषों ने अपने कपड़े नहीं उतारे, "सिवाय इसके कि हर कोई कपड़े केवल धोने के लिये उतारते थे।" इसे पढ़ने पर, अनुवादकों ने "हथियार" के लिये इब्रानी शब्द के स्वरों को दोहराया, इसे क्रिया में बदल दिया "[उन्हें] उतार दिए।" कई संस्करणों ने शब्द को सुधारा "पानी" शब्द का अनुवाद "उसके दाहिने हाथ में" किया। उदाहरण के लिये, ESV में "हममें से कोई भी अपने कपड़े नहीं उतारे; हर कोई अपने दाहिने हाथ की ओर अपना हथियार रखते" (देखें NRSV; REB; NAB; NJB)।[16]

निश्चित ही, नगर की रक्षा के लिये नहेम्याह ने जो कदम उठाए, वे सफल रहे। अगली बार जब हम यहूदा के शत्रुओं के विरोध के बारे में पढ़ते हैं, तो अध्याय 6 में, उनकी रणनीतियाँ बदल गई थी। दबाव के खतरे से यहूदी नहीं डरे, इसलिये शत्रु ने उन्हें हराने के अन्य तरीके अपनाए।

अनुप्रयोग

प्रभावी अगुवाई: तैयारी और विश्लेषण (अध्याय 4)

प्रभावी अगुवे लक्ष्य केन्द्रित होते हैं। वे जानते हैं कि उन्हें क्या पूरा करने की आवश्यकता है। वे महसूस करते हैं कि उन्हें अनदेखी बाधाओं पर जय पानी होगी और अनपेक्षित समस्याओं का निवारण करना होगा। क्यों? इसका कारण यह है कि यह जीवन जटिल है! हमारे सामने सदैव पहाड़ियाँ होंगी जिससे उन पर चढ़ा जाए, शत्रु होंगे जिससे उनसे लड़ा जाए और अनुभव करने के लिए संघर्ष होंगे। बड़ी कठिनाई कोई मूल्यवान बात होगी जिसे आसानी से पूरा किया जा सके। मसीही दृष्टिकोण से, जो लोग प्रभु के लिए कार्य करते हैं वे बाधाओं का सामना करेंगे, क्योंकि हमारा शत्रु शैतान हमारा विरोध करने के लिए कोई न कोई मार्ग ढूँढ लेगा।

नहेम्याह की अगुवाई का एक प्रभावशाली चरित्र यह है कि उसने जिन बाधाओं का सामना किया उन सब पर वह विजयी हुआ - अर्थात उसकी परिस्थिति के द्वारा, उसी के लोगों के द्वारा प्रस्तुत की गईं बाधाओं पर जो परमेश्वर के मानक स्तर के अनुसार जीने में असफल रहे, और उसका विरोध करने वाले शत्रुओं के द्वारा प्रस्तुत की गई बाधाओं पर वह विजयी रहा। वह ऐसा किस प्रकार कर सका? इस प्रश्न का उत्तर देने के द्वारा हम यह सीखेंगे कि किस प्रकार वर्तमान में अगुवे उन बाधाओं पर जय प्राप्त कर सकते हैं जो उनके द्वारा निश्चित किए गए लक्ष्यों को पूरा करने के मार्ग में आती हैं।

बाधाओं पर जय पाने के लिए नहेम्याह के द्वारा काम में ली गई दो रणनीतियाँ तैयारी और विश्लेषण हैं। वह दिए गए काम को पूरा करने के लिए तैयार था और एक समस्या के निवारण पर कार्य करने से पहले उसने उस समस्या का विश्लेषण किया।

तैयारी। एक अगुवा समस्याओं का सामना ज्ञान, बुद्धि और कौशल से कर सके

इसके लिए अच्छी तैयारी आवश्यक है। नहेम्याह ने यरूशलेम की शहरपनाह के पुनः निर्माण का काम हाथ में लेने से पहले ही "राजा का पियाऊ" (1:11) होने के प्रभावी पद से स्वयं को सिद्ध कर दिया कि वह एक विश्वसनीय व्यक्ति है। जब उसने यहूदियों को उनकी परियोजना में अगुवाई दी तब उसने काम को पूरा करने के लिए आवश्यक ज्ञान, बुद्धि और कौशल का प्रदर्शन किया।

वर्तमान में अगुवों के द्वारा तैयारी की आवश्यकता है और तैयारी में खर्च किया गया समय मूल्य रखता है। प्रायः बढ़ई इस प्रकार कहते हैं, "दो बार माप लो, एक बार काटो।" किसी माप को प्रमाणित करने के लिए आवश्यक अतिरिक्त समय लेना लाभप्रद होता है अगर यह इस बात की ज़िम्मेदारी लेता है कि जो काटा जा रहा है वह सटीक होगा और इसमें किसी प्रकार की सामग्री व्यर्थ नहीं जाएगी। अनेक घण्टों का पठन, शिक्षा और प्रशिक्षण बड़े कामों के लिए प्रभावी अगुवे तैयार कर सकते हैं। अन्य लोगों का अवलोकन करने और लोगों को जानने से बहुत कुछ सीखा जा सकता है।

बाइबल में अगुवों ने तैयारी के लिए बहुत समय लिया। अस्सी वर्षों तक परमेश्वर मूसा को उस काम के लिए तैयार कर रहा था जिसे करने के लिए परमेश्वर ने उसका चुनाव किया था। यीशु की तीन वर्षों की सेवकाई से पहले तैयारी के तीस वर्ष बिताए गए। यीशु ने उन तीन वर्षों में अपने चेलों का चुनाव ध्यानपूर्वक किया और उन्हें प्रशिक्षित किया जिससे उसके स्वर्गारोहण के बाद कलीसिया की अगुवाई करने के लिए उन्हें योग्य बनाया जा सके। प्रेरितों को इस कारण उस काम के लिए पूर्णता के साथ तैयार किया गया जो वे करने जा रहे थे। जब उन्होंने बदले में कलीसिया के संयोजन के बारे में निर्देश दिए तब उन्होंने निर्धारित किया कि स्थानीय मण्डलियों के अगुवे "प्राचीन" हों अर्थात वे पुरुष जो अपने जीवन के स्तर और सेवा के वर्षों के कारण परमेश्वर के झुण्ड की चरवाही करने के लिए पूरी तरह से तैयार किए जा सकें।

प्रभु की कलीसिया में अगुवे बनने के लिए मसीही लोगों को चाहिए कि वे तैयारियाँ करें। अच्छी शिक्षा प्राप्त करना, विस्तृत रूप से पढ़ना और ध्यानपूर्वक अवलोकन करना, उपयोगी अनुभव प्राप्त करने के लिए अवसरों की खोज करना और जब अगुवाई करने के लिए परमेश्वर अवसर उपलब्ध करवाए तब उस कार्य को करने के लिए आवश्यक कौशल को बढ़ाना सहायक है। उन्हें तर्क करने, किसी प्रश्न के दोनों पक्षों को देखने और कौन सा दृष्टिकोण बेहतर है इसका निश्चय किस प्रकार किया जाए यह जानने की योग्यता का विकास करना चाहिए। वे अपने जीवन में मसीही अनुग्रह को शामिल करें जिससे अगुवाई करने के योग्य बन जाएँ (2 पतरस 1:5-11; गला. 5:22, 23)।

विश्लेषण। अगुवाई की अपनी भूमिका के लिए तैयारियाँ करने के साथ ही नहेम्याह ने काम करने से पूर्व विश्लेषण किया। एक प्रभावी अगुवा किसी समस्या का समाधान करने का प्रयास करने से पूर्व जाँच पड़ताल करता है। नहेम्याह ने अनेक अवसरों पर उस चरित्र को प्रस्तुत किया। जब उसे पहली बार टूटी हुई शहरपनाह के बारे में बताया गया तो वह रोया और उसने विलाप किया; परन्तु

अनेक महीनों तक उसने फ़ारस के राजा तक अपनी पहुँच नहीं बनाई। क्यों? शायद इसलिए कि वह उस परिस्थिति का विश्लेषण कर रहा था, योजनाएँ बना रहा था और निर्णय ले रहा था कि राजा अर्तक्षत्र के पास किस प्रकार पहुँच बनाई जाए जिससे राजा से स्वीकृति ली जाए जिससे वह यरूशलेम जा सके और समस्या का समाधान करने के लिए अपने देश के लोगों की सहायता कर सके। नहेम्याह ने यरूशलेम में पहुँचने के बाद पुनः निर्माण के लिए लोगों को बुलाने से पहले रात के समय शहरपनाह की स्थिति का मूल्यांकन किया (2:11-16)। जब लोग शहरपनाह का पुनः निर्माण करने लगे तब उन्हें उनके शत्रुओं से चेतावनी मिली। नहेम्याह ने उस चेतावनी को गम्भीरता से लिया, इसके लिए परमेश्वर से प्रार्थना की और उस पर जय पाने के लिए एक रणनीति तैयार की (4:1-23)। जब उसने पाया कि धनवान यहूदी दरिद्र लोगों को धन उधार देने के द्वारा लाभ उठा रहे हैं, ब्याज लगा रहे हैं और फिर उनकी सम्पत्ति को उनके स्वामित्व से ले रहे हैं तब वह "बहुत क्रोधित" (5:6) हुआ। फिर भी उसने उतावली में कोई कदम नहीं उठाया। इसके स्थान पर, समस्या का समाधान करने का प्रयास करने से पूर्व (5:7) - उसने इस विषय पर विचार किया - उसने स्वयं से "सलाह" ली। स्वयं से "सलाह" लेने के परिणामस्वरूप, अपनी समझ बूझ और विश्लेषण से उसने बुद्धिमानी के साथ कदम उठाया।

वर्तमान के अगुवों के लिए नहेम्याह एक अच्छा उदाहरण प्रस्तुत करता है। यह लगभग एक नियम जान पड़ता है: जो अगुवा क्रोध में कदम उठाता है वह अपने उठाए हुए कदम के लिए बाद में पछताता है। चाहे वह क्रोध कितना ही उचित क्यों न हो, इससे पहले अच्छी सलाह यह है कि कोई भी कदम उठाने से पूर्व उस क्रोध को कम होने दिया जाए। बाइबल कहती है, "क्रोध तो करो, पर पाप मत करो; सूर्य अस्त होने तक तुम्हारा क्रोध न रहे, और न शैतान को अवसर दो" (इफि. 4:26, 27); "हर एक मनुष्य सुनने के लिये तत्पर और बोलने में धीर और क्रोध में धीमा हो, क्योंकि मनुष्य का क्रोध परमेश्वर के धर्म का निर्वाह नहीं कर सकता।" (याकूब 1:19, 20)।

एक अति सामान्य अर्थ में, एक अगुवे को चाहिए कि वह योजनाएँ बनाने से पूर्व प्रत्येक स्थिति का ध्यानपूर्वक विश्लेषण करे। वह इस प्रकार के प्रश्न स्वयं से करे: "ऐसा क्या है जिसे हमें पूरा करना है?"; "उस लक्ष्य तक पहुँचने के लिए हमारी पहुँच के अन्तर्गत हमारे पास क्या है?"; "हमारे लक्ष्य को पाने के मार्ग में किस प्रकार की बाधाएँ आड़े आ रही हैं और किस प्रकार उन पर जय प्राप्त की जा सकती है?"; "बाधाओं के दृष्टिकोण में क्या हमें हमारे उद्देश्य या योजनाओं में सामंजस्य बैठाना आवश्यक है?" जब एक बार वह अपना विश्लेषण पूर्ण कर लेता है तब उस उद्देश्य की प्राप्ति के लिए निश्चय के साथ कदम उठा सकता है और उसे ऐसा करना चाहिए।

एक उदाहरण के रूप में नहेम्याह (अध्याय 4)

नहेम्याह अनेक प्रशंसनीय विशेषताएँ रखता था जो हमारे द्वारा अनुकरण

करने के योग्य हैं।

वह ज़िम्मेदारी उठाने वाला व्यक्ति था। यहूदा में आने से पूर्व नहेम्याह ने स्वयं को विश्वासयोग्य सिद्ध किया और राजा के पियाऊ के रूप में सेवा की (1:11)। जब वह यहूदियों पर अधिकार करने के लिए यरूशलेम पहुँचा तब भी उसने विश्वासयोग्यता के साथ अपने कर्तव्यों का वहन करना निरन्तर जारी रखा।

वह दर्शन से भरा हुआ व्यक्ति था। नहेम्याह ने जब जाना कि यरूशलेम की शहरपनाह टूटी हुई है तब वह व्याकुल हो गया (1:3) परन्तु तब उसने उस शहर के पुनः स्थापन का दर्शन प्राप्त किया (2:5)। उसने विश्वास किया कि परमेश्वर की सहायता से यहूदी शहर का पुनः निर्माण कर सकते हैं।

वह एक प्रार्थनावादी व्यक्ति था। नहेम्याह ने पहली बार जब यरूशलेम की स्थिति जानी तब वह प्रार्थना करने के लिए परमेश्वर की ओर फिर गया (1:5-11)। उसने राजा के सम्मुख खड़े रहते हुए भी प्रभु से दिशा निर्देशन और बल की खोज की (2:4)। नहेम्याह ने यहूदियों को धमकाने वाले उनके शत्रुओं से सुरक्षा पाने के लिए भी परमेश्वर की खोज की (4:4, 5, 9)।

वह कदम उठाने वाला और सहयोग करने वाला व्यक्ति था। नहेम्याह ने लोगों को समझा दिया कि उन्हें क्या करने की आवश्यकता थी (2:17; 4:13) और तब वैसा ही करने के लिए उन्हें उत्साहित किया (2:18; 4:14)। शहरपनाह का पुनः निर्माण करने के समय वह वरदान पाया हुआ एक संयोजक था (3:1-32) और उसने लोगों की सुरक्षा सुनिश्चित की (4:12-23)।

वह तरस से भरा हुआ व्यक्ति था। नहेम्याह ने यहूदा के अधिपति के रूप में स्वयं के अधिकारों का लाभ नहीं उठाया (5:18) परन्तु इसके स्थान पर लोगों की भलाई के लिए उत्तम कदम उठाए। उसने उन धनवान यहूदियों को फटकार लगाई जिन्होंने अपने दरिद्र भाइयों से लाभ लिया (5:8)। उसके तरस से भरे हुए कदम परमेश्वर के प्रति आदर के कारण उठाए गए (5:9, 15)।

वह एक ऐसा व्यक्ति था जिसने विरोध पर जय प्राप्त की। यहूदियों के शत्रुओं ने उन्हें डराने के लिए हर प्रकार की युक्ति का प्रयोग किया। उन्होंने उनके द्वारा पुनः निर्माण के प्रयासों को ठट्ठों में उड़ाया (2:19; 4:1-3)। उन्होंने यहूदियों पर झूठा दोष लगाते हुए कहा कि फ़ारसी शासन के विरुद्ध उनकी "मनसा बलवा" करने की है (6:5-7)। उन्होंने नबियों को रुपया दिया जिससे वे गलत दिशा की ओर ले जाने वाली सलाह दें (6:10-14)। नहेम्याह ने इन युक्तियों का प्रत्युत्तर प्रार्थना (4:4), बड़े प्रयास (4:6), चौकसी (4:9), और परमेश्वर पर भरोसा (4:14) रखने के द्वारा दिया।

वह सही प्रेरणा रखने वाला व्यक्ति था। नहेम्याह का मुख्य उद्देश्य यह नहीं था कि उसकी प्रशंसा की जाए अथवा वह अन्य लोगों के द्वारा याद रखा जाए। इसके स्थान पर वह परमेश्वर को प्रसन्न करने में अधिक रुचि रखता था। पुस्तक में उसके अन्तिम शब्द इस प्रकार हैं "हे मेरे परमेश्वर! मेरे हित के लिये मुझे स्मरण रख" (13:31; देखें 5:19; 13:14, 22, 29)।[17]

चौकसी की आवश्यकता (4:16-23)

"स्वतन्त्रता का मूल्य अनन्तता तक चौकसी करना है।"[18] यह कहावत नहेम्याह 4 में अच्छी प्रकार से उन विवरणों में समझाई गई है जहाँ यह बताया गया है कि जब यहूदी यरूशलेम की शहरपनाह का पुनः निर्माण कर रहे थे तब उन्होंने निरन्तर विरोध और आक्रमण की धमकियों के साथ किस प्रकार व्यवहार किया।

नहेम्याह ने यह कहते हुए उस परियोजना की रक्षा की कि आधे लोग काम करें जबकि अन्य आधे लोग सुरक्षा में खड़े रहें। उसने लोगों को निर्देश दिया कि अपने एक तरफ़ हथियारों को थामे रखने के साथ ही काम करें, खतरे का संकेत देने के लिए एक तुरही फूँकने वाले की व्यवस्था की, जिससे जब शत्रु आक्रमण करे तो शहरपनाह के किसी भी भाग की ओर सेना को एकत्रित किया जा सके और शहरपनाह के बाहर रहने वाले लोगों को निर्देश दिए कि वे शहर के अन्दर अपनी रात बिताएँ जिससे रात के समय होने वाले आक्रमण के विरुद्ध सुरक्षा में सहायता दी जा सके। अत्यन्त महत्वपूर्ण यह है कि, उसने यहूदियों से बलपूर्वक आग्रह किया कि वे परमेश्वर पर निर्भर रहें जो उनके लिए लड़ेगा। यहूदियों को यहाँ तक उत्साहित किया गया कि वे अपने वस्त्र नहीं उतारें, सम्भवतः इसलिए कि वे अपने शत्रुओं के आक्रमण का मुकाबला करने के लिए किसी भी समय तैयार रहें।

नहेम्याह की योजना ने काम किया। यहूदियों के शत्रुओं ने इन सतर्क तैयारियों की जानकारी के कारण यरूशलेम पर कभी भी आक्रमण नहीं किया।

हम "अनन्त चौकसी" की आवश्यकता से अवगत हैं जिससे हमारी आत्मिक भलाई की रक्षा की जा सके। मसीही होने के कारण हमने सच्चाई का पालन किया है और इस कारण पाप से "स्वतन्त्र" किए गए (यूहन्ना 8:32; रोमियों 6:17, 18)। फिर भी शैतान हमें फिर से अपने नियन्त्रण में ले लेना चाहता है; वह हमें फिर से पाप के दास बनाना चाहता है।

हम अपनी सुरक्षा किस प्रकार बनाए रख सकते हैं? शैतान की चालों के प्रति "अनन्तता के साथ चौकस" रहने और उसकी परीक्षाओं का निरन्तर सामना करने के द्वारा हम अपनी सुरक्षा बनाए रख सकते हैं। जब हम सोचते हैं कि हम परीक्षा और पाप की सम्भावना से ऊपर उठ गए हैं तब हम गिरने के अत्यधिक खतरे में होते हैं (1 कुरि. 10:12)। हमें पतरस के चेतावनी भरे शब्दों को याद रखना चाहिए: "सचेत हो, और जागते रहो; क्योंकि तुम्हारा विरोधी शैतान गर्जनेवाले सिंह के समान इस खोज में रहता है कि किस को फाड़ खाए" (1 पतरस 5:8)। अगर हम चौकस रहते हैं और शैतान की चालों से स्वयं की रक्षा करते हैं तो, नहेम्याह के समान, अपने शत्रु को दूर भगाने में सफ़ल होंगे। याकूब ने लिखा, "शैतान का सामना करो, तो वह तुम्हारे पास से भाग निकलेगा।" (याकूब 4:7)।

"हमारे पास इकट्ठे हो जाना" (4:20)

यरूशलेम की सुरक्षा के लिए नहेम्याह की योजना के अनुसार अगर शत्रु शहरपनाह के किसी भी भाग पर आक्रमण करता तो "तुरही फूँक" दी जाती। तब

अन्य भागों के लोग उस स्थान पर "इकट्ठे" हो जाते और जिन लोगों पर आक्रमण किया गया उनकी सहायता कर पाते।

उसी प्रकार वर्तमान में जब शैतान, मसीह की देह के एक सदस्य पर आक्रमण करता है तब अन्य सदस्यों के लिए आवश्यक है कि जिस भाई या बहन पर आक्रमण किया गया है उनकी सहायता करने के लिए "इकट्ठे" हो जाएँ। मसीही लोग प्रेम के द्वारा एक साथ बँधे हुए हैं। जब एक व्यक्ति दुख भोगता है तब सब दुख भोगते हैं; जब किसी एक को समस्या होती है तो सब सदस्य उससे प्रभावित होते हैं। "एक दूसरे का भार उठाने" (गलातियों 6:2) के लिए हम उपलब्ध रहें जिससे जब कभी एक साथी मसीही को आवश्यकता हो उस समय उसकी सहायता की जा सके।

समाप्ति नोट्स

[1]आयत इब्रानी बाइबल में अध्याय 4 की पहली छह आयतें अध्याय 3 की अन्तिम छह आयतें हैं; इब्रानी बाइबल में वे 3:33-38 हैं जबकि अध्याय 4 इसके साथ आरम्भ होता है जैसा हम अंग्रेज़ी बाइबल में 4:7 के रूप में देखते हैं। [2]कीथ एन. स्कोविल का ऐसा विचार था कि सामरिया के अधिपति के पास इस प्रकार की एक "सेना" नहीं रही होगी (जबकि अपने फ़ारसी शासकों के लिए सामरिया को सेना की टुकड़ियाँ जुटानी पड़ती होगी) और "सम्बल्लत के पास उपयुक्त रूप से सशस्त्र पुरुषों का एक सैन्य दल रहा होगा जो शायद उसके व्यक्तिगत अंगरक्षक रहे होंगे" (कीथ एन. स्कोविल, *एज्रा-नहेम्याह*, द कॉलेज प्रेस NIV कमेन्ट्री [जोप्लिन, मिसौरी: कॉलेज प्रेस पब्लिशिंग कं., 2001], 169)। [3]डेरेक किड्नर, *एज्रा एन्ड नहेम्याह*, द टिन्डेल ओल्ड टेस्टामेन्ट कमेन्ट्रीज़ (डाउनर्स ग्रोव, इलिनोय: इन्टर-वर्सिटी प्रेस, 1979), 90. [4]नये नियम में, कुछ इसी प्रकार उस समय प्रेरितों के साथ हुआ जब अपने शत्रुओं के द्वारा बन्दी बना लिए जाने और इसके बाद छोड़ दिए जाने के बाद उन्होंने एक प्रार्थना में अगुवाई दी जिसमें उन्होंने अपने शत्रुओं के बुरे कामों के बारे में बताया और तब परमेश्वर से कहा कि वह "उनकी धमकियों को देखे" (प्रेरितों के काम 4:29)। नहेम्याह ने स्वयं बदला लेने के लिए शपथ नहीं खाई; उसने शायद यह सच समझ लिया था कि बदला लेना परमेश्वर का काम है (देखें रोमियों 12:19)। [5]अन्य एड. इस खंड का अनुवाद अलग प्रकार से करते हैं: "उन्होंने तुझे शहरपनाह बनानेवालों के सामने अपमानित किया है" (NRSV); "उन्होंने शहरपनाह बनानेवालों को ख़ुले रूप से क्रोध दिलाया" (REB); "उन्होंने तुझे शहरपनाह बनानेवालों के सामने क्रोध करने के लिए उकसाया है" (NKJV)। [6]जेम्स बर्टन कॉफ़्फ़मेन एन्ड थेल्मा बी. कॉफ़्फ़मेन, *कमेन्ट्री ओन एज्रा, नहेम्याह एन्ड एस्तेर* (अबिलीन, टेक्सास: ACU प्रेस, 1993), 146. [7]इसी प्रकार के दृष्टिकोण के लिए देखें एच. जी. एम. विलियमसन, *एज्रा, नहेम्याह*, वर्ड बिब्लिकल कमेन्ट्री, वोल. 16 (वाको, टेक्सास: वर्ड पब्लिशिंग, 1985), 225-26. [8]"व्यर्थ वस्तु" (עָפָר, *अपर*) के लिए इब्रानी शब्द का अक्षरशः अर्थ "सूखी पृथ्वी" अथवा "धूल" है। फ़िर भी कुछ सन्दर्भों में यह किसी नष्ट हुए नगर के "मलबे" की ओर संकेत करता है (यहेज. 26:4, 12)। [9]राल्फ़ डब्ल्यु. क्लेन, "द बुक्स ऑफ़ एज्रा & नहेम्याह," इन *द न्यु इन्टरप्रिटर्स बाइबल*, एडिटर लिएन्डर ई. केक (नाशविल्ले: एबिंगडन प्रेस, 1999), 3:773. [10]जेकब एम. मेयर्स, *एज्रा, नहेम्याह*, द ऐंकर बाइबल, वोल. 14 (गार्डन सिटी, न्यू योर्क: डबलडे & कं., 1965), 126.

[11]विलियमसन, 221-22, 226. [12]लेस्ली सी. एल्लन एन्ड तिमोथी एस. लानियाक, *एज्रा, नहेम्याह, एस्तेर*, न्यु इन्टरनेशनल बिब्लिकल कमेन्ट्री (पीबॉडी, मैसाचुसेट्स: हेन्ड्रिकसन पब्लिशर्स, 2003), 106. [13]एड्विन एम. यमौची, "एज्रा-नहेम्याह," इन *द एक्सपोज़िटर्स बाइबल कमेन्ट्री*, वोल. 4, *1 राजा-अय्यूब*, एडिटर फ्रेंक ई. गेबलाइन (ग्रान्ड रेपिड्स, मिशिगन: जोनडर्वन पब्लिशिंग हाउस, 1988), 705. [14]जोसेफ़स *एन्टिक्विटीज़* 11.5.8. [15]एल्लन, 107. [16]अधिक जानकारी के

लिए देंखें विलियमसन, 223-24. [17]यमौची से लिया गया, 591. [18]यह सामान्य कहावत जॉन फ़िल्पोट कर्रन (1750-1817) से ली गई जिसने कहा, "जिस शर्त पर परमेश्वर ने मनुष्य को स्वतन्त्रता दी है वह अनन्त चौकसी है" (जॉन फ़िल्पोट कर्रन, "स्पीच अपोन द राइट ऑफ़ इलेक्शन" [10 जुलाई 1790], इन जॉन बार्टलेट्ट, *बार्टलेट्ट्स फ़ेमिलियर कोटेशन्स*, 16वां एड., एडिटर जस्टिन कप्लान [बोस्टन: लिटिल, ब्राऊन एन्ड कं., 1992], 351)।